ISSN : 2349-1876 (Print) / ISSN : 2454-1826 (Online)

Double Blind Peer-reviewed Referreed Research Journal and
Journal has been approved and notified by UGC Serial No. 48941 / PIF 5.46

Volume-V, Issue-II, April 2018

(43)

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES RESEARCH

SPECIAL ISSUE / विशेषांक

मीडिया, साहित्य और राष्ट्रवाद

MEDIA, LITERATURE AND NATIONALISM

EDITOR

DR. HARISH ARORA
P.G.D.A.V. College (Eve.)
(University of Delhi)
Nehru Nagar, New Delhi-110065

ASSOCIATE EDITORS

SH. JASPAL SINGH
DR. JYOTSNA PRABHAKAR

Centre for Scientific & Innovative Research Studies

67. भूमंडलीकरण एवं हिन्दी पत्रकारिता में अभिव्यक्त राष्ट्रीय बोध 250
ज्योति शर्मा
68. भूमंडलीकरण, सोशल मीडिया और राष्ट्रवाद 253
अंजली कायस्था
69. राष्ट्रवाद की अवधारणा और हिन्दी पत्रकारिता 256
संगीता कुमारी
70. राष्ट्रवाद और भारतेन्दुयुगीन पत्रकारिता 259
अरुण कुमार सिंह
71. मध्यकालीन कवि कबीर के काव्य में राष्ट्रवादी भावना 262
ओमवीर सिंह
72. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य 'भारत भारती' में राष्ट्रवाद 265
शक्ति मलिक
73. पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पत्रकारिता और जीवन मूल्य 268
युवराज कुमार
74. स्वतंत्रता आन्दोलन में गाँधी की पत्रकारिता का सक्रिय योगदान 271
मीनाक्षी कुमार
75. स्वतंत्रता पूर्व की साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय जीवन चेतना 274
सिम्मी चौहान
76. सांस्कृतिक पत्रकारिता का मूल चरित्र 278
पिंकी पारीक
77. स्वतंत्रतापूर्व की साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय जीवन चेतना 280
महेश चन्द
78. माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना 283
प्रीति सिंह
79. स्वतंत्रतापूर्व पत्रकारिता में राष्ट्रवाद के विविध स्वर 286
नवाब सिंह
80. राष्ट्रीय और हिन्दी पत्रकारिता 293
महादेवी गौरव / विद्यावती राजपूत
81. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता में राष्ट्रीयता का स्वरूप 296
दुलुमनि तालुकदार
82. उन्नीसवीं सदी की साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रवादी चिन्तन 300
बबिता सिंह
83. Oral Tradition and Culture : A Study of Dogra Folk Songs 305
Kamaldeep Kaur
84. वैश्विक मूल्य और भारतीय राष्ट्रवाद 312
कपिलदेव प्रसाद निषाद
85. भारत में राष्ट्रवाद 315
एकता रानी
86. राष्ट्रवाद के निर्माण में साहित्य एवं मीडिया की महत्ता 317
रेणु गौतम
87. नए भारत में राष्ट्रवाद का स्वरूप और भारतीय पत्रकारिता 320
संगीता रॉय
88. मीडिया और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद 323
सपना सावईकर
89. पत्रकारिता में राष्ट्रबोध की प्रासंगिकता 325
कान्ता देवी
90. भारतीय जीवन मूल्य और पं. दीनदयाल उपाध्याय की पत्रकारिता 328
शीला भास्कर
91. स्वतंत्रतापूर्व साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय जीवन चेतना 331
गीतांजली द. सुखसारे

राष्ट्रीयता और हिन्दी पत्रकारिता

डॉ. महादेवी गौरव
जी.आई. बागेवडी डिग्री कॉलेज
निपानी कर्नाटक

डॉ. विद्यावती राजपूत
जी.आई. बागेवडी डिग्री कॉलेज
निपानी कर्नाटक

पत्रकारिता का अर्थ अंग्रेजी में जर्नलिज्म है इसका शब्दार्थ 'जर्नल' से निर्मित है जो दैनिक सामाजिक कार्य और सरकारी बैठकों का विवरण हो दैनिक समाचार पत्र समग्रता की विकास की रुपरेखा स्पष्ट करने का एक प्रभावी तथा शक्तिशाली माध्यम को ही पत्रकारिता कहा जाता है जो लोकतंत्र का अविभाज्य अंग है समाज में, देश में, मानव जीवन में विश्व में प्रतिपल परिवर्तित होनेवाले जीवन और जगत का अंश का दृष्टांत पत्रकारिता द्वारा ही संभव है इसमें लोकमंगल ही भावना ही सर्वोपरि होती है।

आधुनिक सभ्यता का प्रभावी माध्यम है जो पत्रकार समाचारों को विभिन्न क्षेत्र से जानकारी हासिल करके संपादित करना और लोगों तक पहुँचना यही पत्रकारिता कहलाता है। आज पत्रकारिता में तेजी से परिवर्तन दिखाई दे रहा जैसे- अखबार, पत्रिकाये, रेडियो, दूरदर्शन, वेब पत्रकारिता मोबाइल अंतरजाल के माध्यम से आज पत्रकारिता शक्तिशाली माध्यम का रुप धारण करके देश की राष्ट्र की तरक्की में चार चांद लगा रहे है। डॉ. अर्जुन तिवारी के कथनानुसार ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन-जन तक देश-विदेश तथा पहुँचना ही पत्रकारिता है। यह वह एक कुशल विद्या है जिसमें सभी प्रकार के पत्रकारों के कार्यो, कर्तव्यों और लक्ष्यों का विवेचन होता है पत्रकारिता समय के साथ समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है।

हिन्दी की समाचार पत्रकारिता का शुभारंभ 19वीं सदी से माना जाता है आज के कलकत्ता, बंबई, मद्रास, नगर के हन्दी के पहले पत्र उदंत मार्तण्ड' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला गया था। भारतेंदु युग हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास की गौरवपूर्ण अध्याय है। हिन्दी कर साहित्यिक पत्रकारिता हरिश्चंद्र और 'कविवचन सुधा' हमारी हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास की गौरवपूर्ण अध्याय है। इसकी पीठिका में ही हिन्दी पत्रकारिता के प्राणतत्व को पहचाना जा सकता है इसके बाद बंगदूत (1829) प्रजामित्र (1834) बनारस अखबार (1846) ज्ञानदीप (1846) मालवा अखबार (1849) सुधाकर (1850) आगरा अखबार (1870) बोधा समाचार आदि समाचार पत्रों का उदघाटन हुआ इन पत्रों में कुछ मासिक थे, कुछ, साप्ताहिक, दैनिक पत्र केवल एक था समाचार सुधावर्षण जो द्विभाषिक (बंगला हिंदी) कलकत्ता से प्रकाशित होता था। यह पत्र 1871 तक चलता रहा अधिकांश पत्र आगरा से प्रकाशित होते थे उन दिनों वहाँ बडा शिक्षा केंद्र था। बनारस अखबार (1845) काफी प्रभावशाली था तभी 1850 मे तारामोहन मैत्र ने काशी से साप्ताहिक सुधाकर और राजा लक्षणसिंह ने सन 1855 मे आगरा से प्रजाहितैषी का प्रकाशन आरंभ किया था। राजा शिवप्रसाद का बनारस अखबार उर्दू भाषा शैली को अपनाता था। अंत में हरिश्चंद्र मैगजीन के प्रकाशन 1873 तक निश्चित भाषा शैली का उतना काफी विकास नही हुआ था।

इसके उपरांत हिन्दी पत्रकारिता का दूसरा युग आरंभ हुआ जिसमें नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदन प्राप्त सरस्वती इन 27 वर्षो तक प्रकाशित पत्रों की संख्या 300-350 से ऊपर जा पहुँची थी परंतु वास्तव में दैनिक समाचार के प्रति उस समय विशेष आग्रह नही था इसलिए मासिक और साप्ताहिक पत्रा अधिक थे महत्वपूर्ण भी माने जाते थे। उन्होने जन जागरण में अत्यंत महत्वपूर्ण का दानित्व निभाया था। भारतेंदु ने इस दिशा में पथ प्रदर्शन किया था उनकी टीका टिप्पणियों से अधिकारी वर्ग तक घबराते थे कविवनसुधा के पंच पर रुष्ठ होकर काशी के मजिस्ट्रेट ने भारतेंदु के पत्रों को शिक्षा विभाग के लिए लेना बंद करा दिया था पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेंदु थे। उन्होंने नए पत्रों के लिए प्रेरित करके हिन्दी प्रदीप भारत जीवन अनेक पत्रों का नामकरण के युग के अग्रणी पत्रकार का श्रेय ही प्राप्त किए थे। इसतरह भारतेंदु ने सामाजिक राजनीतिकू और साहित्यिक दिशाएं भी विकसित की उन्होंने (1874) में बालबोधिनी नामसे पहला मासिक पत्र चलाया। मिर्जापुर जैसे - इसाई केंद्रो में भी उन्होंने धार्मिक परिवर्तनों के युग बोध के साथ पत्रिकाओं में अभिव्यक्त करके मानव समुदाय, सभ्यता, संस्कृति, धर्म, नीति राजनीति आदि में विकास के और संरक्षण में इनकी पत्रिकायें महत्वपूर्ण की भूमिकायें निभाये थी। ऐतिहासिक घटना चक्र, राजनीति संबंधी